वाक्यांश के लिए एक शब्द

जब अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है, तब उन शब्दों को वाक्यांश के लिए एक शब्द कहा जाता है; जैसे— जिस पर विश्वास किया जा सके — विश्वसनीय

1. जिसे कहा न जा सके	—	अकथनीय
2. जिसे क्षमा न किया जा सके	—	अक्षम्य
3. जिसकी गिनती न हो सके	—	अगण्य
4. जिसको अनुभव हो	—	अनुभवी
5. जो पहले न हुआ हो	—	अपूर्व
6. जिसका मूल्य न आँका जा सके	—	अमूल्य
7. जो इस लोक का न हो	—	अलौकिक
8. जो कम खाता हो	—	अल्पाहारी
9. जिसका वर्णन न किया जा सके	—	अवर्णनीय
10. अवश्य होनेवाली घटना	—	अवश्यंभावी
11. जो कानून के अनुसार न हो	—	अवैध
12. जो बिना वेतन के काम करे	—	अवैतनिक
13. जिसकी सहायता करनेवाला न हो	—	असहाय
14. जिसकी कोई सीमा न हो	—	असीम
15. जहाँ रोगियों का इलाज होता है	—	अस्पताल
16. जो अहिंसा में विश्वास रखे	—	अहिंसावादी
17. ऊपरी बनावट या तड़क-भड़क	—	आडंबर
18. अपनी हत्या स्वयं करना	—	आत्महत्या
19. जो नई खोज करे	—	आविष्कारक
20. जो ईश्वर में विश्वास रखता हो	—	आस्तिक
21. वर्षा के समय आकाश में दिखनेवाला सतरंगा धनुष	—	इंद्रधनुष
22. जो दूसरों से ईर्ष्या करता हो	—	ईर्ष्यालु
23. जो बाद में अधिकारी बने	—	उत्तराधिकारी
24. जिसका हृदय विशाल हो	—	उदार
25. शिष्टाचारवश किया गया कार्य	—	औपचारिक
26. जहाँ से औषधि (दवा) मिले	—	औषधालय
27. काँटों से भरा हुआ	—	कंटकाकीर्ण
28. कलाकार द्वारा बनाई गई वस्तु	—	कलाकृति
29. जो कार्य कष्ट उठाकर किया जाता हो	—	कष्टसाध्य
30. निरंतर कर्मशील रहनेवाला	—	कर्मठ

64. आगे की सोचनेवाला — दूरदर्शी
65. धर्म को चलानेवाला — धर्मप्रवर्तक
66. आकाश में घूमनेवाला — नभचर/खेचर
67. नया आया हुआ व्यक्ति — नवागंतुक

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

जिन शब्दों का उच्चारण लगभग समान लगे परंतु अर्थ अलग अलग हों, वे श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

1. अनल — आग
   अनिल — हवा
2. अनु — पीछे
   अणु — कण
3. अनुसार — के मुताबिक
   अनुस्वार — 'अं', पंचम वर्ण
4. अर्घ — जलदान
   अर्ध — आधा
5. अवलंब — सहारा
   अविलंब — शीघ्र
6. अविराम — लगातार
   अभिराम — सुंदर
7. इतर — दूसरा
   इत्र — फूलों से तैयार किया गया खुशबूदार तेल
8. उद्यत — तैयार
   उद्धत — उद्दंड, शरारती
9. कंकाल — हड्डियों का ढाँचा
   कंगाल — निर्धन
10. कलि — कलयुग
    कली — फूल का प्रारंभिक रूप
11. कुल — वंश, सब
    कूल — किनारा
12. कृपण — कंजूस
    कृपाण — छोटी तलवार
13. कोर — किनारा
    कौर — ग्रास (भोजन)
14. क्षति — हानि
    क्षिति — पृथ्वी
15. चपल — चंचल
    चपला — बिजली
16. चरण — पैर
    चारण — भाट
17. चरम — अंतिम
    चर्म — चमड़ा
18. चालक — चलानेवाला (ड्राइवर)
    चालाक — होशियार
19. चिर — प्राचीन, देर
    चीर — वस्त्र
20. जरा — बुढ़ापा
    जरा — तनिक
21. तरंग — लहर
    तुरंग — घोड़ा
22. तरणी — नौका
    तरुणी — युवती
23. दीप — दीया
    द्वीप — टापू

17 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

Idiom and Proverb

मुहावरे

जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है तो 'मुहावरा' कहलाता है।

1. अंधे के आगे रोना — *निर्दयी के सामने दुखड़ा रोना।*

   इस अफ़सर के मन में बिलकुल दया नहीं है। इसे अपना दुखड़ा सुनाने का अर्थ है— अंधे के आगे रोना।

2. अक्ल पर पत्थर पड़ना — *बुद्धि से काम न लेना।*

   मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गए थे जो मैंने पढ़ाई छोड़ने जैसा बेकार निर्णय लिया।

3. अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारना — *अपनी हानि स्वयं करना।*

   जो विद्यार्थी समय का सदुपयोग नहीं करते, वे अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारते हैं।

4. अपना ही राग अलापना — *अपनी ही बात कहते जाना।*

   तुम दूसरे की बात तो सुनते ही नहीं, अपना ही राग अलापते रहते हो।

5. आँखें नीची होना — *लज्जित होना।*

   बेटे की करतूत का पता चलने पर रंगनाथन की आँखें नीची हो गईं।

6. आँच न आने देना — *तनिक भी क्षति न पहुँचने देना।*

   मैं शपथ लेता हूँ— चाहे प्राण चले जाएँ परंतु अपने देश पर आँच न आने दूँगा।

7. आकाश-पाताल का अंतर होना— *बहुत अंतर होना।*

   इन दोनों बहनों में आकाश-पाताल का अंतर है।

8. आग-बबूला होना — बहुत क्रोधित हो जाना।

   शिव जी का धनुष टूटा देख परशुराम आग-बबूला हो उठे।

9. आग में घी डालना — *क्रोध को और भड़काना।*

   पिता जी तो पहले ही गुस्से में हैं। तुम और शिकायतें करके क्यों आग में घी डाल रहे हो।

10. आस्तीन का साँप होना — *कपटी मित्र।*

मैं तो ऋषभ का बिलकुल विश्वास नहीं करता। वह तो आस्तीन का साँप है।

11. उड़ती चिड़िया पहचानना — *बहुत अनुभवी होना।*

कर्ण को अनाड़ी मत समझना। वह तो उड़ती चिड़िया पहचानता है।

12. एक और एक ग्यारह होना — *संगठन में शक्ति।*

जब से दोनों भाइयों ने अपने झगड़े समाप्त कर इकट्ठे काम किया है, घर की उन्नति चार गुना हो गई है। कहा भी गया है कि एक और एक ग्यारह होते हैं।

13. कमर कसना — *तैयार होना।*

मैडल जीतना है तो प्रतियोगिता के लिए अभी से कमर कस लो।

14. कलई खुलना — *भेद खुल जाना।*

जब पुलिस ने पूरी छानबीन की तो नकली डिग्रीवाले डॉक्टर की कलई खुल गई।

15. कलेजा ठंडा होना — *संतोष होना।*

जब तक वह अपना बदला न ले लेगा तब तक उसका कलेजा ठंडा न होगा।

16. कान कतरना अथवा कान काटना — *बहुत चतुराई दिखाना।*

आजकल के बच्चों को सीधा-सादा मत समझना। ये तो कान कतरते हैं।

17. कान भरना — *चुगली करना।*

शिकायतें करना जूही का स्वभाव है। हर समय भैया के विरुद्ध अपनी मम्मी के कान भरती रहती है।

18. काया पलट होना — *किसी चीज का रूप बिलकुल बदल जाना।*

तुम्हारा शहर तो बहुत उन्नति कर गया है। काया पलट ही हो गया है।

19. कीचड़ उछालना — *निरादर करना।*

दूसरों पर कीचड़ उछालोगे तो तुम्हीं को कलंक लगेगा।